अपनी तकदीर खुद लिखेंगे

मणिमाला

बहनो, आज हम एक छोटे से गांव चलेंगे। इस गांव की औरतों से मिलेंगे! हमारे समाज की सबसे कमजोर तबके की औरतें हैं ये। इनको मुसहर कहते हैं सभ्य लोग। इनके हाथ में कभी कोई रोजगार नहीं रहा। कभी इनका अपना खेत नहीं हुआ। कभी इन्होंने खुद के लिए मेहनत नहीं की। इन्होंने जाना ही नहीं था कि अपने लिए मेहनत करना क्या चीज होती है।

जो इनकी मेहनत पर जीते रहे उन्हीं की दया पर ये जीते रहे। कैसा मजाक था यह! हमारे सभ्य समाज के सभ्य लोगों ने इन्हें इनकी मेहनत की कभी कीमत नहीं चुकायी। जो जठून फेंका वह मेहनत की कीमत कह कर नहीं, दया कह कर। पर कब तक? कब तक कोई हंस कर अन्याय झेल सकता है? भला कब तक कोई रो-रोकर जी सकता है? तो इस गांव के लोगों ने भी तय कर लिया कि वे अपनी किस्मत बदल कर रहेंगे। अपनी तकदीर खुद लिखेंगे।

महिला ग्राम कोष

मधुबनी (बिहार) के सोहरई गांव में महिलाओं ने महिला ग्राम कोष बनाया। कई साल से इन गांवों में सक्रिय एक सामाजिक संस्था लोक शक्ति संगठन ने इस गांव की मुसहर औरतों को पांच-पांच सौ रुपए का कर्जा दिया। यह कर्ज़ा साल भर में चुकाना था। तय किया गया हर माह 53 रुपए के हिसाब से वे कर्ज़ा चुकाएंगी। साल भर में कर्ज़ा तो चुकाएंगी ही, ऊपर से 136 रुपए

ज्यादा भी देंगी। इसके एवज में उन्हें सालाना 76 रुपए बोनस दिया जाएगा। महिला ग्राम कोष का यह पैसा अलग-अलग औरतों को दिया जाएगा। बारी-बारी से। ताकि सब कुछ रोजगार शुरू कर सकें।

500 रुपए में रोजगार? वह भी अपना? ऊपर से कर्ज़ा चुकाना? शहर के बड़े लोग कभी सोच भी सकते हैं क्या? पर ये औरतें ही थीं जिन्होंने एक पीढ़ी नहीं, पीढ़ी दर पीढ़ी बंधुआ जिंदगी का दर्द भोगा था। हाड-मांस जला कर भी कभी अपनी कमाई क्या होती है, यह नहीं जाना था।

पहली बार इनके हाथ में पांच सौ रुपए आए। कर्ज़ा होने के बावजूद अपना था यह। क्योंकि इनके वापस किए पैसे से फिर उन्हीं की तरह एक औरत को कर्ज़ा मिलना था। सपने भी अपने थे। कर्ज़ा भी अपना था। कर्ज़ा लौटाना भी अपनों को

ही था। सो, पांच सौ रुपए से ही इन्होंने तकदीर बदलनी शुरु कर दी। अपनी भी। और गांव की भी। एक की नहीं, 20 गांवों की।

मूली देवी की पहल

मूली देवी सोहराई गांव में रहती है। बाकी स्त्री-पुरुषों के तरह इसने भी जीवन में कभी अपने लिए काम नहीं किया था। उसने चावल खरीदने और शहर ले जाकर बेचने का धंधा शुरू किया। धंधा चल गया। अब वह सोचती है गांव में उपजी सब्जी भी शहर ले जाकर बेचे। क्यों दे वह बिचौलियों को पैसे? मूली देवी ने आज पूरा कर्ज़ा चुका दिया है। उसने चुकाया तो दूसरी सोमनी देवी को मिला। उसने भी सपने बुनने शुरू कर दिए। उसका सपना है कि वह इन पैसों से सूत खरीदेगी। इस सूत से उसका पति जाल बुनेगा। जाल से मछली मारी जाएगी। फिर सोमनी उसे बाजार में बेचेगी। वह दूसरे की बेगारी नहीं करेगी।

बस, एक कर्ज़ा चुकाती गयी, दूसरी को मिलता गया। दिया से दिया जलता गया। आज आस-पास के बीस गांवों में महिला ग्राम कोष बना लिया है समाज की सबसे कमजोर तबके की औरतों ने। छोटी-छोटी कर्जे की राशि। छोटी-छोटी किश्तें। छोटे-छोटे धंधे। छोटे-छोटे सपने... मरे हुए चूहे खाकर जिंदा रहने वालों की जिंदगी बदलने के बड़े सपने बुन रहे हैं ये गांव।

तो बहनो, बोलो कैसे लगे ये गांव? कैसी लगी ये ओरतें? कैसा लगा यह महिला ग्राम कोष? निश्चित ही बहुत अच्छा! □

पहली सीढ़ी से चढ़ो
पूरा पढ़ो
तभी आगे बढ़ोगे
देर नहीं हुई
अ आ इ ई पढ़ो
लेकिन पढ़ लो
बीच में न छोड़ो शुरू करो
सब कुछ तुम्हें आए
तब कमान संभालने की तैयारी करो
जिन्हें देश निकाला मिला है पढ़ाई करो
जिन्हें जेल मिली है पढ़ाई करो
पढ़ो रसोईदारिन बीवी पढ़ो
तब कमान संभालने की तैयारी करो
स्कूल खोजो
बिना ज्ञान वालो खोजो, ज्ञान खोजो
तुम जो ठंड से जमे जा रहे हो
भुखमरी जीते हो
किताब तक पहुंचो
ये हथियार होगा
तब सरकार संभालने की तैयारी करो